पितृ कृपा चालीसा श्री पितरजी चालीसा

श्री पितरजी चालीसा :-
(श्री पितरजी कृपा चालीसा)

दोहा 1 :- सबसे पहले पूजे जाते,
जगमें दोनों देव |
एक तो श्री गणपति प्रभु,
दूजे पितर देव ||

दोहा 2 :- छोड़ गए जो दुनिया को,
रहते हरदम पास |
नमन करूँ उन पितरों को,
दिल में जिनका वास ||

चौपाईयां :
जय जय जय पितरजी देवा |
सदा करुं चरणों की सेवा

हाथ जोड़कर ध्यान धरूं मैं |
पितरों का सम्मान करुं मैं

चौदस मावस पूजे जाते |
दीप जलाते धोक लगाते

वस्त्र, नारियल, भेंट चढ़ाते |
पितरों की जयकार लगाते

चरण पादुका रूप में वंदन |
आरती, भजन करुं अभिनंदन

देशविदेश जहां भी रहूं मैं |
कृपा आपकी पाता रहूं मैं

पितरों की किरपा हो जिनपे |
रोज दिवाली रहती उनके

चाहे हो कोई भी जाती |
पितरों को सारी दुनिया मनाती

कार्य सिद्ध का एक ही मंतर |
सबसे पहले घर का पित्तर

नित उठ सिमरू नाम आपको |
ॐ पितृ देवतायै नमः जापको

श्राद्ध पक्ष पित्तर त्योंहार |
घर बनजाता पित्तर द्वार

आपके नाम से ब्राम्हण जिमाते |
काग, श्वान, गौ ग्रास खिलाते

एक एक पल जो संग गुजारे |
वो थे सुनहरे दिवस हमारे

मेलजोल और प्यार तुम्हारा |
याद है आता साथ तुम्हारा

कोई जरूरतमंद जो पाऊं |
आपके नाम से उसे खिलाऊं

कहीं लक्ष्य से भटक न जाऊं |
कृपा हो आगे बढ़ता जाऊं

कभी कभी जाने अंजाने |
पितृदोष बनता सब जाने

अकस्मात या अधूरी ईच्छा |
गर ना हुई हो मृत्यु स्वेच्छा

पितृदोष इन्ही कारण बनता |
दानधर्म पिंडदान से टलता

पितरों का यदि ऋण हो चुकाना |
पीपल सींचो वंश बढ़ाना

पितृदोष यदि तुम्हे घटाना |
हरे भरे दो पेड़ लगाना

तर्पण, दान, श्राद्ध करवाते |
शुद्ध जल से खुश हो जाते

शादी सगाई जन्मोत्सव में |
पित्तर जरूरी हर उत्सव में

गृहप्रवेश और शुभमुहूर्त में |
पित्तर पूजो हर सूरत में

मैं नादान हूँ शरण तुम्हारी |
हरदम रखना लाज हमारी

जिनके पितर सुखमय होई |
उनका काम रुके ना कोई

नजर आपकी जो पड़ जाए |
दामन के कांटे झड़ जाए

आशीर्वाद बनाए रखना |
सर पे हाथ फिराए रखना

कभी किसी का दिल न दुखाऊं |
सत्कर्मो का पुण्य कमाऊं

ना कमजोर बनूँ ना रोगी |
रखो मेरा परिवार निरोगी

विमुख आपसे कभी न होऊं |
सुख से जागूं निर्भय सोऊं

भूल चूक हमसे हो जाए |
आप कभीभी क्रोध न लाएं

मीठी नजर बनाए रखना |
दयादृष्टि बरसाए रखना

भूल जाऊं मैं सर को झुकाना |
आप कभी मुझको न भुलाना

मेरे सब अपराध भुलाना |
अपना समझके प्यार लुटाना

भले बुरे का ज्ञान मुझे दो |
भगती का वरदान मुझे दो

दान धर्म करवाते रहना |
उचित मार्ग बतलाते रहना

कृपा करो सक्षम हो जाऊं |
आपके नाम से भवन बनाऊं

नतमस्तक हो महिमा गाऊं |
अगली पीढ़ी को भी बताऊं

कृपा चालीसा जब जब गाऊं |
आपको अपने सन्मुख पाऊं

दोहा :- श्री पितर चालीसा,
पढ़े सुने जो कोय |
अम्बरीष कहता उन भग्तों के,
घर में मंगल होय ||

लीरिक्स : अम्बरीष कुमार

https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/35196/title/pitru-krupa-chalisa-shri-pitar-ji-chalisa

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |